विचार बिन्दु

मेरी एक प्रबल कामना है कि मैं कम से कम एक आँख का आंसू पोछ दूं।
–महात्मा गाँधी

क्या प्रशासन का काम केवल हमें दुख देने का ही रह गया है?

मेरे यहां जो अख़बार आते हैं उनमें इन दिनों अन्य सारी ख़बरों के साथ-साथ करीब-करीब हर दिन इस आशय के समाचार बहुत प्रमुखता से मिल रहे हैं कि शहर (मेरा आशय जयपुर से है) में अतिक्रमण, अवैध निर्माण व नाजायज़ कब्ज़ा हटाओ अभियान बहुत ज़ोर-शोर और कामयाबी के साथ चल रहा है। शहर का एक ख़ास हिस्सा अतिक्रमण से मुक्त किया जा रहा है और अब वहां की सड़कें खूब चौड़ी हो जाएंगी। सोशल मीडिया के अन्य मंचों पर भी लगभग इसी आशय की ख़बरें खूब साझा हो रही हैं। यहां तक कि दो-एक दिन से तो एक बहुत बड़े समूह के पांच सितारा होटल को भी जल्दी ही अवैध निर्माण होने की वजह से ध्वस्त किए जाने के समाचार उस होटल विशेष की तस्वीरों के साथ नज़र आ रहे हैं।

अतिक्रमण हमारे समाज की एक बहुत बड़ी बीमारी है, जिसे जब मौका मिलता है वह अपनी हैसियत और ताकत के अनुसार उस ज़मीन पर जिस पर उसका स्वामित्व नहीं है, कब्ज़ा कर लेता है। आप शहर की किसी भी सड़क या गली को देख लें, आप पाएंगे कि अतिक्रमण की वजह से वह सिकुड़ कर आधी रह गई है। अतिक्रमण करने के मामले में कोई पीछे नहीं रहना चाहता है। मामूली से मामूली आदमी से लगाकर बड़े से बड़ा आदमी इस नदी में डुबकी लगा लेने को लालायित रहता है, और मौका मिलते ही लगा भी लेता है। शहर की कॉलोनियों में कभी हम अपने घर के आगे रैम्प बनाने के नाम पर तो कभी बड़ी गाड़ी खड़ी करने के लिए जगह बनाने के नाम पर और कभी फुलवारी लगा कर पर्यावरण पर अपनी कृपा बरसाने के नाम पर अतिक्रमण करने का जुगाड़ कर लेते हैं। बाज़ारों में जाएं तो पाएंगे कि दुकानदार अपना सामान प्रदर्शित करने के नाम पर, अपना साइन बोर्ड रखने के नाम पर और न जाने किन-किन मौलिक तरीकों से अतिक्रमण कर लेते हैं। त्योहारों के सीज़न में तो बाज़ारों का जो हाल होता है, वह वर्णन से परे है। कुल मिलाकर, जो समर्थ और ताकतवर हैं वे तो पूरे के पूरे भवन ही नाजायज़ रूप से खड़े कर लेते हैं। पीछे वे भी नहीं रहते हैं जो असमर्थ और कमज़ोर हैं।

नागरिक तो नागरिक सरकारी तंत्र भी इस काम में पीछे नहीं रहता है। एक उदाहरण तो यही देखा जा सकता है कि पुलिस वाले सड़क पर जहां उनको ठीक लगता है, अपनी गुमटी खड़ी कर देते हैं। सड़क के बीच उनका वाहन खड़ा रहता है! विधायकों और मंत्रीगण की तो बात ही क्या की जाए! किसकी मज़ाल है तो उनको टोके। वे तो मालिक हैं ही। जो ख़ुद कानून बनाते हैं भला उन पर कोई कानून कैसे लागू हो सकता है? ऐसा नहीं है सब ऐसा करते हैं। लेकिन बहुत सारे लोग करते हैं।

वैसे इस सबके मूल में हमारी मानसिकता है। जो हमारा प्राप्य है और जिसके हम वाकई अधिकारी हैं, हम उससे ज़्यादा पा लेना चाहते हैं और ऐसा करते वक़्त हम उचित-अनुचित की परवाह नहीं करते हैं। कहा जा सकता है कि यह तो सहज मानवीय प्रवृत्ति है। लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूं। मुझे लगता है कि हम कहने में और सिद्धांतों में जितने ईमानदार, नैतिक और धर्म-भीरू होने का दावा और दिखावा करते हैं, उतने वास्तव में हैं नहीं। हमारा यथार्थ उससे उलट है। जिस पश्चिम की हम निंदा करते नहीं अघाते हैं, वह ऐसी बहुत सारी बातों में हमसे भिन्न और बेहतर है। लेकिन यहां सवाल पूर्व और पश्चिम की तुलना का या किसी को किसी से बेहतर बनाने का नहीं है। अगर हम इस विवाद में उलझेंगे तो मूल बात पीछे रह जाएगी। इसलिए उसी पर आता हूं।

अतिक्रमण और अवैध निर्माण व अनुचित कब्ज़े को रोका जाए, और जो हो चुका है, उसे हटाया जाए, इसमें किसी भी ज़िम्मेदार नागरिक को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आखिर प्रशासन और कानून का काम है भी क्या? चोरी होती है, अपराध होते हैं तो उनको रोकने के लिए पुलिस होती है। और भी सारे ग़ैर कानूनी काम होते हैं तो सरकार के बहुत सारे अंग-उपांग उन्हें रोकने का काम करते हैं। यह भी सही है कि पूरा का पूरा समाज आदर्श नहीं होता है। लोग अनुचित लाभ उठाने या ग़ैर कानूनी काम करने के लालच में आ ही जाते हैं। अगर वे ऐसा न करें तो सरकार और प्रशासन की ज़रूरत ही ख़त्म हो जाए। इसलिए अगर सरकार ग़लत को सही करने का उपक्रम करती है तो उसका स्वागत होना चाहिए।

मैं भी स्वागत करना चाहता हूं, लेकिन कर नहीं पा रहा हूं!

> **नागरिक तो नागरिक, सरकारी तंत्र भी इस काम में पीछे नहीं रहता है। एक उदाहरण तो यही देखा जा सकता है कि पुलिस वाले सड़क पर जहां उनको ठीक लगता है, अपनी गुमटी खड़ी कर देते हैं। सड़क के बीच उनका वाहन खड़ा रहता है! विधायकों और मंत्रीगण की तो बात ही क्या की जाए! किसकी मज़ाल है तो उनको टोके। वे तो मालिक हैं ही। जो ख़ुद कानून बनाते हैं भला उन पर कोई कानून कैसे लागू हो सकता है?**

जब इन सारी ख़बरों को पढ़ता हूं, जिनमें से ज़्यादातर संबद्ध विभागों के जन सम्पर्क कर्मियों द्वारा ही समाचार माध्यमों को उपलब्ध कराई जाती है, और इन ख़बरों के साथ-साथ अतिक्रमण हटाने से परेशान होने वाले सामान्य जन की पीड़ाओं की करुण गाथाएं पढ़ता हूं तो मन में बहुत सारे सवाल उठने लगते हैं। हम पाते हैं कि बहुत सारे ऐसे अतिक्रमण हटाए जाते हैं जो बरसों से मौज़ूद थे। पूरी की पूरी बस्तियां बस जाती हैं। दुकानदार लोग लंबे अर्से से उस जगह पर अपना व्यवसाय करते रहते हैं, जिस पर उनका स्वामित्व था ही नहीं। थड़ियां लगती हैं, फुटपाथ पर बैठ कर धंधा करते लोग जवान से बूढ़े हो जाते हैं। मेरे मन में सवाल यह उठता है कि इतना बड़ा सरकारी अमला है, उसे यह अतिक्रमण वगैरह होता हुआ नज़र नहीं आता है? अवैध निर्माण होता है, पूरी की पूरी बिल्डिंग बन जाती है, जिसके बनने में ज़ाहिर है कुछ महीने तो लगे ही होंगे, तब क्या किसी को भी यह सब नज़र नहीं आया? अगर नहीं आया तो यह बात क्यों नहीं होनी चाहिए कि इस सब पर नज़र रखने का जिनका दायित्व था, वे अपना दायित्व निर्वाह करने में नाकामयाब रहे हैं। इनमें चपरासी, बाबू, अफसर से लगाकर मंत्री तक सब शामिल हैं। क्या इन पर कोई कार्यवाही नहीं होनी चाहिए? किस बात की तनख़्वाह लेते रहे हैं ये? एक बस्ती बस गई, बरसों लोग उसमें रहते रहे, और एक दिन अचानक प्रशासन अपनी कुंभकर्णी नींद से जागे और वहां रहने वालों को खदेड़ने पहुंच जाए! बुलडोज़र (यह हमारा नया हीरो है!) लेकर और तमाम डरावने जाब्ते के साथ पहुंच जाए। लोग रोते-गिड़गिड़ाते रहें, लेकिन अंधा कानून अपना काम करता रहे। अगले दिन के अखबारों में प्रशासन की पराक्रम गाथा छपे कि इतनी सारी सरकारी ज़मीन को अवैध कब्ज़े से मुक्त कराया गया! बेशक कब्ज़ा अवैध था और उसे हटाया जाना चाहिए था। लेकिन ऐसा करने में इतना विलंब क्यों हुआ? सोचिये, अगर कब्ज़ा होते समय ही उसे रोक दिया गया होता तो लोगों की जमी जमाई गृहस्थी तो नेस्तनाबूद नहीं होती। यह आकस्मिक नहीं है कि जब चुनाव होने वाले होते हैं तो निर्माण गतिविधियां बहुत तेज़ हो जाती हैं। हर कोई जानता है कि जब चुनाव आने वाले होते हैं तो प्रशासन अवैध निर्माण की तरफ से आंखें बंद कर लेता है। और इतना ही नहीं, बाद में भी जब कोई अतिक्रमण हटाने का अभियान चलता है तो जन प्रतिनिधि गण अपने समर्थकों के अतिक्रमण को बचाने के लिए सक्रिय हो जाते हैं, प्राय: बचा भी लेते हैं। इससे क्या संदेश जाता है?

हममें से हरेक को बाज़ार का और कॉलोनियों का अतिक्रमण नज़र आता है। जो हो चुका है वह भी नज़र आता है और जो होने की प्रक्रिया में है वह भी नज़र आता है। इन्हें राहों से वे सब भी गुज़रते हैं जिन पर इन अतिक्रमणों को रोकने की आधिकारिक ज़िम्मेदारी है। इन्हीं मुहल्लों-कॉलोनियों में वे भी रहते हैं। लेकिन साल के अधिकांश समय वे धृतराष्ट्र बने रहते हैं। उनके इस निकम्मेपन की सज़ा आम जन को भुगतनी पड़े, यह कहां का न्याय है? आखिर क्यों हमारा प्रशासन अचानक गहरी नींद से जागता है, हरकत में आता है और फिर हाइबर्नेशन में चला जाता है। यह इच्छा से सोने और जागने का खेल कब तक चलेगा? इसे बड़े और रसूखदारों का समर्थन कब तक मिलता रहेगा? कभी तो ऐसा हो कि जिस मंत्री के अधीन ये सारे महकमे आते हैं वह ज़िम्मेदारी ले कि हां मैं अपने दायित्व का निर्वहन करा सकने में असमर्थ रहा हूं! वह ज़िम्मेदारी ले, अपनी नाकामी पर लज्जित हो और अपने अधीनस्थों को पाबंद करे, और चेताए कि अगर उनके होते कुछ भी अवैध हुआ तो उन्हें बख़्शा नहीं जाएगा। और यह चेतावनी चेतावनी न रहे। अमल में भी आए!

और चलते-चलते इतना और कि जो बात मैं अतिक्रमण और अवैध निर्माण व कब्ज़े के लिए कह रहा हूं वही बात अन्य बहुत सारे मुद्दों पर भी लागू होती है। कहां वाहन पार्क हो सकते हैं, कहां नहीं – किसी को पता नहीं चलता। आप वाहन खड़ा करते हैं और अचानक आपका वाहन उठा लिया जाता है। सड़क पर ट्रैफिक लाइट्स इस तरह लगाई जाती हैं कि वे ऊंचे वाहनों की वजह से प्राय: दूर से नज़र ही नहीं आती। उन्हें ठीक करने की फिक्र किसी को नहीं होती। घंटों जाम लगा रहता है, उससे आपको कोई निज़ात नहीं दिलाता, लेकिन टार्गेट पूरा करने के लिए चालान करने वाला सरकारी अमला पूरा मुस्तैद नज़र आता है। ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता है कि हमारी सुविधाएं भी बढ़ें? क्या प्रशासन का काम केवल हमें दुख देने का ही रह गया है? सोचिये!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

वेंकैया गारू–भारत की सेवा में समर्पित जीवन

आज भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति और राष्ट्रीय राजनीति में शुचिता के प्रतीक हमारे श्री एम.वेंकैया नायडू गारू का जन्मदिवस है। वेंकैया नायडू जी आज 75 वर्ष के हो गए हैं। उन्होंने राष्ट्र सेवा और जनसेवा को हमेशा सर्वोपरि रखा है। मैं उनके दीर्घायु होने और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। देश में उनके लाखों चाहने वाले हैं। मैं उनके सभी शुभचिंतकों और समर्थकों को भी बधाई देता हूं। वेंकैया जी का 7 5 वां जन्मदिवस एक विशाल व्यक्तित्व की व्यापक उपलब्धियों को समेटे हुये है। उनका जीवन सेवा, समर्पण और संवेदनशीलता की ऐसी यात्रा है,जिसके बारे में सभी देशवासियों को जानना चाहिए। राजनीति में अपने प्रारम्भिक दिनों से लेकर उपराष्ट्रपति जैसे शीर्ष पद तक , नायडू गारू ने भारतीय राजनीति की जटिलताओं को जितनी सरलता और विनम्रता से पार किया वो , अपने आपमें एक उदाहरण है। उनकी वाकपटुता, हाजिरजवाबी और विकास से जुड़े मुद्दों के प्रति उनकी सक्रियता के कारण उन्हें दलगत राजनीतित से ऊपर हर पार्टी में सम्मान मिला है। वेंकैया गारू और मैं दशकों से एक-दूसरे से जुड़े रहे हैं। हमने लबे समय तक अलग-अलग दायित्वों को संभालते हुए साथ काम किया है, और मैंने हर भूमिका में उनसे बहुत कुछ सीखा है। मैंने देखा है, जीवन के हर पड़व पर आम लोगों के प्रति उनका स्नेह और प्रेम कभी नही बदला।

वेंकैया जी सक्रिय राजनीति से आंध्र प्रदेश में छात्र नेता के रूप में जुड़े थे। उन्होंने राजनीति के पहले पड़व पर ही प्रतिभा, वक्तृत्व क्षमता और संगठन कौशल की अलग छाप छोड़ी थी।किसी भी राजनीतिक दल में उन्हें कम समय में बड़ा स्थान मिल सकता था। लेकिन उन्होंने संघ परिवार के साथ काम करना पसंद किया, क्योंकि उनकी आस्था राष्ट्र प्रथम के विजन मे थी। उन्होंने विचार को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखा और बाद में जनसंघ एवं बीजेपी को मजबूत किया। लगभग 50 साल पहले जब कांग्रेस पार्टी ने देश में आपातकाल लगाया था, तब युवा वेंकैया गारू ने आपातकाल विरोधी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्हें लोकनायक जेपी को आंध्र प्रदेश में आमंत्रित करने के लिए जेल जाना पड़ा। लोकतंत्र के लिए उनकी ये प्रतिबद्धता, उनके राजनीतिक जीवन में हर जगह दिखाई देती है। 1980 के दशक के मध्य में, जब महान एनटीआर की सरकार को कांग्रेस ने गलत तरीके से बर्खास्त कर दिया था, तब वे फिर से लोकतांत्रिक सिद्धांतों की रक्षा के लिए हुए आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में थे।

1978 में आंध्र प्रदेश जब कांग्रेस के पक्ष में मतदान किया था। तब वेंकैया जी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद एक युवा विधायक के रूप में जीतकर आए थे , पांच साल बाद, राज्य चुनाव में एनटीआर की लोकप्रियता अपने सर्वोच्च स्तर पर थी। तब भी वे बीजेपी के विधायक चुने गए। उनकी जीत ने आंध्र समेत दक्षिण में बीजेपी के लिए भविष्य के बीज बोये थे। युवा विधायक के रूप में ही, वे विधायी मामलों में अपनी दृढता और अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की आवाज उठाने के लिए सम्मानित होने लगे। उनकी वाकपटुता, शब्दशैली और संगठन सामर्थ्य से प्रभावित होकर एनटीआर जैसे दिग्गज ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। एनटीआर उन्हें अपनी पार्टी में शामिल करना चाहते थे, लेकिन वेंकैया गारू हमेशा की तरह अपनी मूल विचारधारा पर अडिग रहे। उन्होंने आंध्र प्रदेश में बीजेपी को मजबूत करने में बडी भूमिका निभाई, गांवों में जाकर सभी क्षेत्रों के लोगों से जुड़े। उन्होंने विधानसभा में पार्टी का नेतृत्व किया और आंध्र प्रदेश बीजेपी के अध्यक्ष भी बने।

1990 के दशक में बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व ने वेंकैया गारू के परिश्रम और प्रयासों को पहचानते हुये उन्हें पार्टी का अखिल भारतीय महासचिव नियुक्त किया। 1993 में यहीं से राष्ट्रीय राजनीति में उनका कार्यकाल शुरू हुआ था। एक ऐसा व्यक्ति, जो किशोरावस्था में अटल जी और आडवाणी जी के दौरों की तैयारी करता था, उनके लिए ये कितना बड़ा मुकाम था। पार्टी महासचिव के रूप में, उनका एक ही लक्ष्य था कि अपनी पार्टी को सत्ता में कैसे लाया जाए! उनका एक ही संकल्प था कि कैसे देश को बीजेपी का पहला प्रधानमंत्री मिले। दिल्ली आने के बाद, उनकी मेहनत का ही परिणाम था कि उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कुछ ही समय बाद वे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने।

वर्ष 2000 में, जब अटल जी सरकार बना रहे थे तो वो वेंकैया गारू को अपनी सरकार में मंत्री बनाना चाहते थे। अटल जी ने उनसे उनकी इच्छा पूछी तो वेंकैया गारु ने ग्रामीण विकास मंत्रालय को अपनी प्राथमिकता के रूप में चुना। उनकी इस पसंद ने तब कई लोगों को हैरान किया था। क्योंकि, उसके पहले नेताओं के लिए दूसरे मंत्रालय पहली पसंद हुआ करते थे। लेकिन, वेंकैया गारू की सोच बिल्कुल स्पष्ट थी- वह एक किसान पुत्र थे, उन्होंने अपने शुरुआती दिन गांवों में बिताए थे और इसलिए, अगर कोई एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें वह काम करना चाहते थे, तो वह ग्रामीण विकास था। उस समय एक मंत्री के रूप में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना को जमीन पर उतारने में उनकी अहम भूमिका थी।

2014 में एनडीए सरकार ने सत्ता संभाली, तो उन्होंने शहरी विकास, आवासन एवं शहरी गरीबी उन्मूलन जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों को संभाला। उनके कार्यकाल के दौरान ही हमने स्वच्छ भारत मिशन और शहरी विकास से संबंधित कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू कीं। शायद, वह उन नेताओं में से एक हैं जिन्होंने इतने लंबे समय तक ग्रामीण और शहरी विकास दोनों के लिए काम किया है।

2014 के उन शुरुआती दिनों में वेंकैया जी का अनुभव मेरे भी बहुत काम आया था। मैं उस समय दिल्ली के लिए एक बाहरी व्यक्ति था। मेरा करीब डेढ़ दशक गुजरात में ही काम करते हुये बीता था। ऐसे समय में वेंकैया गारू का सहयोग मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वह एक प्रभावी संसदीय कार्य मंत्री थे। वो सदन में पक्ष-विपक्ष की बारीकियों को समझते थे। साथ ही, जब संसदीय मानदंडों और नियमों की बात आती थी, तब वो नियमों को लेकर भी उतना ही स्पष्ट नज़र आते थे।

वर्ष 2017 में, हमारे गठबंधन ने उन्हें हमारे उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में नामित किया। ये हमारे लिए एक कठिन और दुविधा से भरा निर्णय था। हम ये जानते थे कि वेंकैया गारू के स्थान को भरना बेहद कठिन होगा। लेकिन साथ ही, हमें ये भी पता था कि उपराष्ट्रपति पद के लिए उनसे बेहतर कोई और उम्मीदवार नहीं है। मंत्री और सांसद पद से इस्तीफा देते हुए उन्होंने जो भाषण दिया था, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। जब उन्होंने पार्टी के साथ अपने जुड़ाव और इसे बनाने के प्रयासों को याद किया तो वह अपने आंसू नहीं रोक पाए। इससे उनकी गहरी प्रतिबद्धता और जुनून की झलक मिलती है। उपराष्ट्रपति बनने पर उन्होंने कई ऐसे कदम उठाए जिससे इस पद की गरिमा और भी बढ़ी। वह राज्यसभा के एक उत्कृष्ट सभापति थे, जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि युवा सांसदों, महिला सांसदों और पहली बार चुने गए सांसदों को बोलने का अवसर मिले। उन्होंने सदन में उपस्थिति पर बहुत जोर दिया, समितियों को अधिक प्रभावी बनाया। उन्होंने सदन में बहस के स्तर को भी ऊंचा उठाया।

जब अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को हटाने का निर्णय राज्यसभा के पटल पर रखा गया, तो वेंकैया गारू ही सभापति थे। मुझे यकीन है कि यह उनके लिए एक भावनात्मक क्षण था। वह युवा जिसने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के एक विधान, एक निशान, एक प्रधान के संकल्प के लिए अपना जीवन समर्पित किया था, जब वह सपना पूरा हुआ तो वह सभापति के पद पर आसीन था। किसी निष्ठावान देशभक्त के जीवन में इससे बड़ा समय और क्या होगा!

काम और राजनीति के अलावा, वेंकैया गारू एक उत्साही पाठक और लेखक भी हैं। दिल्ली के लोगों के बीच, उन्हें उस व्यक्ति के रूप में जाना जाता है जो शहर में गौरवशाली तेलुगु संस्कृति लेकर आए। उनके द्वारा आयोजित उगादी और संक्रांति कार्यक्रम स्पष्ट रूप से शहर के सबसे पसंदीदा समारोहों में से एक हैं। मैं वेंकैया गारू को हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जानता हूं जो भोजन प्रेमी हैं और शानदार मेजबानी करना जानते हैं।

लेकिन, पिछले कुछ समय से उनका संयम भी सबके सामने दिखने लगा है। फिटनेस के प्रति उनकी प्रतिबद्धाता इस बात से झलकती है कि वह अभी भी बैडमिंटन खेलना और ब्रिस्क वॉक करना पसंद करते हैं।

उपराष्ट्रपति पद का कार्यकाल पूरा करने के बाद भी, वेंकैया गारू सार्वजनिक जीवन में बेहद सक्रिय हैं। वह लगातार देश के लिए जरूरी मुद्दों और विकास कार्यों को मुझसे बात करते रहते हैं। हाल ही मे जब हमारी सरकार तीसरी बार सत्ता में लौटी, तो मेरी उनसे मुलाकात हुई थी। वह बहुत खुश हुए और उन्होंने मुझे व हमारी टीम को अपनी शुभकामनाएं दी। मैं एक बार फिर उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। मुझे आशा है कि युवा कार्यकर्ता, निर्वाचित प्रतिनिधि और सेवा करने का जुनून रखने वाले सभी लोग उनके जीवन से सीख लेंगे और उन मूल्यों को अपनाएंगे। यह वेंकैया गारू जैसे लोग ही हैं जो हमारे राष्ट्र को बेहतर और अधिक जीवंत बनाते है।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

आरोग्य के देवता के देवदूत डॉक्टर्स

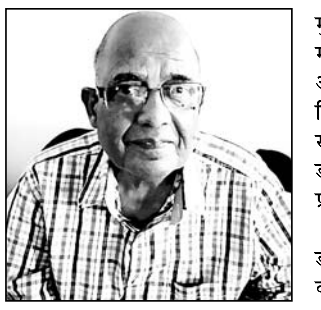

डॉ. जे.के.गर्ग

डॉक्टर्स दुवारा मानव एवं पशुओं के सुस्वास्थ्य के लिए दी गई अमूल्य सेवा और योगदान के बारे में जनसाधारण को जागरूक करने के लिये प्रतिवर्ष भारत में 1 जुलाई को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस (डॉक्टर्स डे) मनाया जाता है। भारत के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. बिधान चन्द्र रॉय को श्रद्धांजलि और सम्मान देने के लिये 1 जुलाई को उनकी जयंती और पुण्यतिथि पर इसे मनाया जाता है। डॉ.बी.सी.रॉय का जन्म 1 जुलाई 1882 को बिहार के पटना में हुआ था। डा.रॉय ने 1911 में एक चिकित्सक के रुप में अपने चिकित्सा जीवन प्रारम्भ किया था। वो एक प्रसिद्ध चिकित्सक तथा प्रख्यात शिक्षाविद् होने के साथ ही स्वतंत्रता सेनानी भी थे। महात्मा गांधी के सम्पर्क में आने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के नेता बने और उसके बाद पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बने। इस दुनिया में अपनी महान सेवा देने के बाद 80 वर्ष की आयु में 1962 में अपने जन्मदिन के दिन ही उनकी मृत्यु हो गयी। उनके सम्मान में वर्ष 1976 में उनके नाम पर डॉ.बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रारम्भ किया गया।

माँ हमारे जीवन की सबसे पहली डॉक्टर है जो जीवन भर हमारी देखभाल करती है। ईश्वर सबके जीवन की रक्षा खुद से नही कर पाते इसलिए इस धरती पर अपने दूत के रूप में डॉक्टर को भेज दिया। बीमारी से लड़ने की ताकत एक डॉक्टर ही हमे देता है। वो इन्सान डॉक्टर ही होता है जो रोते हुए आये मरीज को हँसाते हुए भेजता है। जीवन जीना एक कला है जिन्हें जीने के लिए माँ-बाप के बाद एक डॉक्टर की ही सलाह की जरूरत पड़ती है। आधी से अधिक बीमारी तो डॉक्टर के सांत्वना से ही ठीक हो जाती है, निसंदेह डॉक्टर इस संसार के वास्तविक हीरो होते है जो देवदूत बन कर हमारे जीवन की रक्षा करते है।

एक डॉक्टर अपने मरीज के स्वास्थ्य को लेकर हमेशा चिंतित रहता है। वहीं उत्तम श्रेणी का डॉक्टर मरीज की बीमारी इलाज करने से पहिले उसके मन का इलाज करते है एवं उसे उसके उत्तम स्वास्थ्य के लिये लाभदायक सलाह मशविरा भी देते है क्योंकि वो जानते है कि स्वास्थ्य लाभ में दवा के साथ मरीज मे ठीक होने का आत्म विश्वास भी जरुरी होता है। हमें जीवन से प्यार करना भी डॉक्टर ही सीखाते है।उनको मरीज की जाति या धर्म और अमीरी गरीबी से मतलब नही होता उसके लिए सभी मरीज एक समान होते है। बड़ी से बड़ी बीमारी को डॉक्टर अपने सुझबुझ से मरीज के सामने उस बीमारी को छोटा बनाकर अपने इलाज से उस बीमारी को खत्म कर देते है। अच्छा डॉक्टर हमे दवा का आदी नही बनाता बल्कि दवा से कैसे दूर रहे उसकी सलाह ज्यादा देता है।

याद रखिये कि बीमारी के इलाज से पहिले मरीज के दिल में यह विश्वास जरूरी है कि मेरी बीमारी असाध्य नहीं है और में उपचार के साथ अपनी दिनचर्या और सोच में जरूरी बदलाव लाकर स्वस्थ हो जा हूँगा। निसंदेह जब हम अपने सारी उम्मीदें खो देते है तब हमारे जीवन में स्वास्थ्य लाने के लिए और वहाँ हमारा साथ देने के लिए केवल डॉक्टर के पास ही उस जीवन के इलाज के लिए जादुई शक्ति होती है।

आज से बीस-पच्चीस साल पूर्व सही मायने के अंदर देवदूत ही होते थे। एक बार मेरी माता जी को अच्चंक हृदयघात हो गया आधी रात को उनको अस्तपताल ले जाया गया, कुछ ही समय बाद नगर के एक मात्र हृदय विशेषक डा. सीता राम मित्तल अपनी पुरानी साईकल पर मेरी माता जी को देखने और उनका इलाज करने के लिए होस्पिटल आधी रात को आ गये और मरीज के पास चार-पांच घंटे खड़े रहें, जब तक मेरी मान खतरे से बाहर नहीं हो गयी। मेरे सभी स्वजन औरआस पास खड़े लोग उनको देवदूत पुकारने लगे। उस समय नगर के अन्य प्रसिद्ध डॉक्टर सर्जन भी जरूरत पड़ने पर रोगी के निवास पर जाने में कोई संकोच नहीं करते थे। काश आज भी ऐसा हो पाता। कुछ समय पूर्व मेरा भतीजा ललित गर्ग ब्यावर में बीमार चल रहा था और अपने बचपन के मित्र डॉक्टर से इलाज करवा रहा था उसको हमेशा उसका परामर्श शुल्क भी देता था। 25 जनवरी की रात को उसकी तबीयत अचानक बीगड़ गई, अनेको स्वजन लोग उस डॉक्टर की घर पर उससे अनुनय करने लगे और ललित को देखने उसके घर पर चलने के लिए प्राथना करने लगे, उसको मन चाही फीस भी देने लगे किन्तु निष्ठुर देवदूत ने मना कर दिया। कुछ ही समय बाद ललित अपनी बेटियों पत्नी स्वजनो को रोता-बीलखता छोड़ पंच तत्वों के अंदर विलीन हो गया। क्या हम ऐसे डॉक्टर को देव दूत पुकारेंगे? कभी नहीं।

भौतिक सुख-सुविधा की तडक-भडक के इस समय मे डॉक्टर्स भी धन लोलुपता से ग्रस्त हो गये हैं और उनके लिए उनके निजी हित और स्वार्थ मरीज के उपचार और इलाज से ज्यादा जरूरी बन गये हैं, ऐसे ही डॉक्टर्स के कारण उनका नोबेल पेशा बदनाम होकर अपनी गरिमा को नष्ट कर रहा है। इंडीयन मेडिकल एसोसिएशन से अनुरोध है कि वो डॉक्टर से सलाह दें कि गम्भीर अपाहिज शय्याग्रस्त रोगी को देखने उनके घर पर जरुर जाकर उनका इलाज करके उनका जीवन दान दें और देव दूत बने।

हमारे प्रांत राजस्थान में स्वास्थ्य के अधिकार का कानून बन चुका है। इस कानून के अधीन सरकार डॉक्टरों को आदेश दें कि गंभीर अपाहिज शय्या ग्रस्त रोगी को देखने उनके घर पर जरुर जाकर उनका इलाज करके उनको जीवन दान दें और देव दूत बने। सच्चाई यही है कि मनुष्य मृत्यु पर अपने साथ सिर्फ उसके कर्म ले जाता है और ये कर्म ही उसके अगले जन्म में उसको भोगने पड़ते हैं।

वहीं दूसरी तरफ मरीजों के कतिपय रिश्तेदार अकारण ही डॉक्टर्स से हाथापाई करके उनको शारीरिक/मानसिक यातना देते हैं और उनके साथ मारपीट करते हैं। इसलिए सरकार को कार्यरत डॉक्टरों की सुरक्षा के लिये समुचित कठोर कानून बनाने चाहिए। डॉक्टर्स डे के दिन डॉक्टरों को भी आत्म चिन्तन करते हुए अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को समझना होगा। डॉक्टर को चिकित्सा को मात्र पैसा कमाने का साधन नहीं मान कर उसकी जगह इसे मानवीय सेवा का नोबेल मिशन बनाना चाहिये।

–डॉ. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज
शिक्षा जयपुर

नए आपराधिक कानूनों के लागू होने पर लॉ गार्डन तैयार किया

■ न्यू लॉ गार्डन के उद्घाटन के अवसर पर नये कानूनों की मुख्य विशेषताओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी

अजमेर, (कासं)। एक जुलाई से देश भर में उपनिवेश काल से जारी मुख्य आपराधिक कानूनों के स्थान पर नए कानून लागू होंगे। इनमें भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया संहिता तथा एविडेंस एक्ट के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम क्रियान्वित होंगे। नए कानून लागू होने के उपलक्ष्य में देश भर में कई कार्यक्रम आयोजित होंगे। कारागार प्रशिक्षण संस्थान में जेल प्रहरियों द्वारा अनूठा प्रयोग किया गया है। उन्होंने महिलाओं द्वारा संचालित एनजीओ इनरव्हील क्लब की सहायता से एक बगीचा तैयार किया है, जिसमें कई फलदार, फूलदार व छायादार पौधे लगाए जाएंगे। इस बगीचे का नाम नए आपराधिक कानूनों के लागू होने पर लॉ गार्डन रखा है, जिसका सोमवार को उद्घाटन किया जाएगा।

इनरव्हील क्लब की अध्यक्ष ईशिता कोठारी, सचिव पूर्णिमा तोषनीवाल ने क्लब की ओर से पौधे, खाद, उपजाऊ मिट्टी आदि जेटीआई को उपलब्ध करवाये हैं। जेल अधीक्षक पारस जांगिड, प्रशासनिक अधिकारी मोहन सिंह तथा पर्यावरण प्रेमी बाबू सिंह रावत के निर्देशन में प्रशिक्षु जेल प्रहरियों तथा सहायक प्रशिक्षकों सुभाष जांगू, सोमराज, देवेंद्र सिंह, सुभाष बिश्नोई, गजराज, अर्जुन, खेतपाल, बनवारीलाल, रसाल देवी आदि द्वारा बगीचा तैयार किया गया है। सोमवार को न्यू लॉ गार्डन के उद्घाटन के अवसर पर नये कानूनों की मुख्य विशेषताओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। इस अवसर पर जिला प्रशासन तथा न्यायिक अधिकारियों, नागरिकों, रिटायर्ड जेल अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत एवं सम्मान किया जाएगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 1 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र प्रात: 6:26 तक, सुकर्मा योग दिन 1:41 तक, विष्टि करण दिन 10:27 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

कुमार योग प्रात: सूर्योदय से प्रात: 6:26 तक है। भद्रा प्रात: 10:27 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:23 तक, शुभ 9:05 से 10:48 तक, चर 2:13 से 3:55 तक, लाभ-अमृत 3:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:20

मेष
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आज शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आज परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

मकर
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।